1

દૂર કાં પ્રભુ ! દોડ તું

દૂર કાં પ્રભુ ! દોડ તું, મારે રમત રમવી નથી;
આ નયનબંધન છોડ તું, મારે રમત રમવી નથી.દૂર. ૧.
પ્યાસુ પરમ રસનો સદા, શોધું પરમ-રસ-રૂપને;
અનુભવ મને અવળો થયો, એવી રમત રમવી નથી...દૂર. ૨.
હું તો સુધાનો સ્વાદિયો, ચાલ્યો સુધાની શોધમાં;
ત્યાં ઝેરનો પ્યાલો મળ્યો, એવી રમત રમવી નથી....દૂર. ૩
તું આવીને ઉત્સાહ દે કાં ફેંક કિરણ પ્રકાશનાં;
આ લક્ષ વિણ રખડી મર્યાની, આ રમત રમવી નથી....દૂર. ૪
હે તાત ! તાપ અમાપ આ, તપવી રહ્યા છે ત્રિવિધના;
એ તાપમાંહી તપી મર્યાની, આ રમત રમવી નથી...દૂર. ૫.
નથી સહન કરી શકતો પ્રભુ ! તારા વિરહની વેદના;
હે દેવ ! તુજ દર્શન વિના, મારે રમત રમવી નથી....દૂર. ૬.
નથી સમજ પડતી હે પ્રભુ ! કઈ જાતની આ રમત છે;
ગભરાય છે ગાત્રો બધાં, મારે રમત રમવી નથી.દૂર. ૭.
હો એ રમત ઘડી બે ઘડી, બહુ તો દિવસ બે ચારની;
આ તો અનંતા યુગ ગયા, એવી રમત રમવી નથી....દૂર. ૮.
ત્રિભુવનપતિ ! તુજ નામના થાક્યો કરી કરી સાદને;
સુણતા નથી કયમ દાસને, આવી રમત રમવી નથી.દૂર. ૯.

हे प्रभु मै आपके समीप रहूँ! अब विषयों के पीछे दौड़ु नहीं, मैं संसार में घूमना नहीं चाहता; इस मोह बंधन को छोड़ दू, मैं और भव भ्रमण करना चाहता नहीं। मुझे सदा परम सुख की अभिलाषा हैं परम-रस-रूप की खोज का निर्णय हुआ हैं; आत्म अनुभव ने मुझे इस क्षणिक संसार के विषयों से दूर कर दिया... दूर॥1-2॥

मैंने आत्मिक सुख याने अमृत का स्वाद चखा है, सुधा की खोज में; जहाँ जहर का प्याला मिले, ऐसा उपक्रम नहीं करना। ऐसा कोई राग द्वेष नहीं करना। आप मेरे हृदय में आओ, मन उत्साहित करो या मेरे अंतर में समा जाओ, अपने ज्ञान प्रकाश की किरणों से हमें प्रकाशित कीजिए।; (क्योंकि आप स्व पर प्रकाशत्व शक्ति से परिपूर्ण हो।) ऐसे लक्ष्य के बिना जीवन की एक भी घड़ी कार्यकारी नहीं है। प्रभु...॥3-4॥

हे तात! ताप अपरिमेय है, आपने त्रिविधि कर्म को जला दिए हैं; इस तप रूपी अग्नि में तपकर, यह संसार स्वांग फिर कटना नहीं है। प्रभु हम आपका विरह सहन नहीं कर सकते! प्रभु! आपके विरह का दुख असहनीय हैं ; हे प्रभु! आपके दर्शन के बिना, मुझे कहीं भी अच्छा नहीं लगता। दूर...॥ 5-6॥

मुझे समझ नहीं आता प्रभु! यह कैसा विचित्र संयोग है; रूह का हर कतरा डरा हुआ है, मैं ऐसे संसार के दुःख नहीं चाहता। मुझे तो आपके समान सच्चा सुखी और निर्भय होना हैं। जैसे कोई खेल घंटे दो घंटे तक चलता है, कभी-कभी दो या चार दिन तक चलता है, लेकिन अनंत युग बीत गया है, ऐसा कोई कार्य नहीं जो मैने कभी नहीं किया, ऐसा कोई भोग नहीं जो मैने नहीं भोगा। दूर...॥7-8॥ (अनादि काल से हमने अनंत बार पंच परावर्तन पूरे किये, फिर भी सच्चा सुख नहीं मिला ऐसा क्यों ? क्योंकि सच्चा अपना स्वरूप नहीं समझा) हे त्रिभुवनपति! आपके नाम मात्र का स्मरण करने से भव की थकान मिट जाती है। हे प्रभु! मेरी विनती सुनिए, मुझे सदा के लिए अपने चरणों में स्थान दीजिए, अपने समान वीतरागी बना लीजिए। मै भी परिपूर्ण हूँ, सुन लीजिए विनती मेरी, दूर ऐसा भव भ्रमण हो ॥9॥ जन्म मरण जरा रोग से दूर हो जाऊँ।